वह कोई और ही था - सुकन्या दत्ता

वह कोई और ही था

जो बिना वजह मुस्कुराता था

आसमान में बादलों को देख कर भी

चाँदनी की बातें किया करता था

"यह ग़म कौन सी बीमारी है?"

पलक झपका के पूछता था

तूफ़ान आ रहा है जान कर भी

खिड़कियों को खोल दिया करता था

ओस की बूंदों को छूने के लिए

सर्दियों में जल्दी उठा करता था

सुबह की नरम धूप चेहरे पे लिए

आधा पाव पत्ती चाय पिया करता था

हर रोज़ वह शीशे के सामने

पगड़ी बांधते हुए घंटों बिताया करता था

फिर दाढ़ी संवारने के बाद

आँखों में सुरमा भी लगाया करता था

ज़िन्दगी बहुत प्यारी थी उसे

हर एक पल को जिया करता था

इश्क़ और भी प्यारा था तो

जी जान से वह प्यार करता था

शायद वह कोई और ही था

जो बिना वजह मुस्कुराता था

आसमान में बादलों को देख कर भी